19 February 2021

पीएसएपी उर्वरक से गन्ना उत्पादन व गुणवत्ता में होगी बढ़ोतरी

कानपुर (एसएनबी)। राष्ट्रीय गन्ना संस्थान, कानपुर में बृहस्पतिवार को आयोजित एक गोष्ठी में गन्ना उत्पादकों की आय दोगुनी करने के क्रम में नये विकसित उर्वरक पीएसएपी (पोटेशियम साल्ट ऑफ एक्टिव फॉस्फोरस) का उपयोग करने की सलाह दी गई। दावा किया गया इस उर्वरक के उपयोग से गन्ना किसान प्रति हेक्टेयर 30-40 फीसद तक पैदावार बढ़ा सकते हैं। इससे प्रति हेक्टेयर लगभग 20-25 टन गन्ने की पैदावार बढ़ जाती है। साथ ही इस गन्ने की गुणवत्ता भी काफी अच्छी होती है। गोष्ठी में उप्र सहित अन्य अग्रणी गन्ना उत्पादक राज्यों के वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

उक्त उर्वरक के विकास में ईशा एग्रो साइंसेज प्रा.लि.,पुणे द्वारा किया गया है। इसका परीक्षण राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान लखनऊ, उप्र गन्ना शोध परिषद शाहजहांपुर एवं गन्ना अनुसंधान संस्थान पाडेगांव महाराष्ट्र में किया गया है। कंपनी के एग्रीकल्चर एडवाइजर डॉ.नरेन्द्र जानी व टेरेटरी मैनेजर, उप्र कुवेन्द्र श्रीवास्तव ने गन्ना उत्पादन बढ़ाने के लिए परंपरागत यूरिया की जगह पीएसएपी के प्रयोग के लाभों की जानकारी दी। सीएसए कृषि विवि के पूर्व कुलपति डॉ.एस सोलोमन ने कहा कि इस उर्वरक के प्रयोग से न केवल गन्ने की उत्पादकता बढ़ती है, अपितु उसमें

सम्बोधित करते एनएसआई के निदेशक नरेन्द्र मोहन।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की गोष्ठी में की गई नये उर्वरक के प्रयोग की सिफारिश

चीनी की मात्रा भी बढ़ जाती है। इससे यह किसानों व चीनी मिल मालिकों दोनों के लिए लाभप्रद रहता है।शर्करा संस्थान के निदेशक प्रो.नरेन्द्र मोहन ने कहा कि गन्ने से सीधे एथनाल बनाने के प्रयत्नों को देखते हुए भविष्य में प्रति हेक्टेयर पैदावार बढ़ाने की आवश्यकता होगी।

इसे देखते हुए इस प्रकार के उर्वरक का विकास गन्ना किसानों के लिए बहुत फायदेमंद हो सकता है। संस्थान के आचार्य कृषि रसायन डॉ.अशोक कुमार ने पीएसएपी के परीक्षण का ब्योरा प्रस्तुत किया।

वैज्ञानिकों ने गन्ना किसानों को दिये नये विकल्प

गोष्ठी को सम्बोधित करते विशेषज्ञ।

कानपुर । राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में गुरूवार को मुख्य भवन में स्थित सम्मेलन कक्ष में गन्ना उत्पादकों की आय दोगुनी करने के संबंध में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में देश के अग्रणी गन्ना उत्पादक राज्यों के वैज्ञानिकों ने भाग लिया। संगोष्ठी में बताया गया कि नये विकसित उर्वरक पोटेशियम साल्ट ऑफ एक्टिव फोसफोरस के उपयोग से गन्ना उत्पादन में प्रति हेक्टेयर की वृद्धि कर आय को बढ़ाया जा सकता है। इस उर्वरक का विकास मे. ईशा एग्रो साइंसेज प्रा. लि. पुणे द्वारा किया गया है। जानकारी देते हुए डॉ नरेंद्र जानी एग्रीकल्चर एडवाइजर ने बताया कि गन्ना उत्पादक मुख्य तौर पर यूरिया का प्रयोग कर प्रति हेक्टेयर पैदावार बढ़ाने का प्रयास करते हैं। नया यूरिया इसका अच्छा विकल्प हो सकता है। सीएसए के पूर्व कुलपति सुशील सोलोमन ने बताया कि इसके प्रयोग से गन्ना की पैदावार के साथ चीनी की माला भी बढ़ाई जा सकती है। संस्थान के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने कहा कि केंद्र सरकार गन्ना किसानों की आय दोगुनी करने के लिये प्रयत्नशील है। वर्ष 2022 को देखते हुए सरकार गन्ना किसानों के लिये कई योजनाओं पर कार्य कर रही है।

नई तकनीक से बढ़ सकती पैदावार

कानपुर | वरिष्ठ संवाददाता

नई तकनीक का प्रयोग कर किसान गन्ने की 25 टन पैदावार बढ़ा सकते हैं। इसके लिए किसानों को नए विकसित उर्वरक पीएसएपी (पोटेशियम साल्ट ऑफ एक्टिव फास्फोरस) का उपयोग करना होगा। यह बात विशेषज्ञों ने कही। विशेषज्ञ गन्ना किसानों की आय बढ़ाने को लेकर मंथन कर रहे थे।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की ओर से मुख्य भवन स्थित सम्मेलन कक्ष में एक

नितिन देशपांडे का हुआ सम्मान।

संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें उप्र, महाराष्ट्र, कर्नाटक व अन्य अग्रणी गन्ना उत्पादक राज्यों के वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया। ब्रेन स्टार्मिंग सेशन में संस्थान के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन व चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. सुशील सोलोमन ने उर्वरक के उपयोग के बारे में जानकारी दी। इससे उत्पादकता बढ़ने के साथ गन्ने से चीनी की मात्रा भी बढ़ जाती है। प्रो. नरेंद्र मोहन ने कहा कि गन्ने की उत्पादकता बढ़ाने के लिए सरकार निरंतर प्रयास कर रही है। गन्ने की खेती के लिए नई तकनीकी का प्रयोग करना जरूरी है।

नई तकनीक से बढ़ेगा गन्ने का उत्पादन : डॉ. सुशील सोलोमन

जागरण संवाददाता, कानपुर : गन्ने के उत्पादन बढ़ने से गन्ना किसानों के साथ ही चीनी मिलों को लाभ मिलेगा। नई तकनीकों के प्रयोग से प्रति हेक्टेयर उत्पादकता बढ़ेगी। यह बात चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. सुशील सोलोमन ने कही।

एनएसआइ में गुरुवार को वह किसानों की आय बढ़ाने को लेकर आयोजित संगोष्ठी में बोल रहें थे। उन्होंने कहा कि चीनी मिलों को चीनी के साथ ही इथेनॉल उत्पादन के बारे में योजना बनानी होगी। कई मिलों ने काम शुरू कर दिया है। ईशा एग्रो साइंसेज प्रा. लिमिटेड के उप्र के मैनेजर कुवेंद्र श्रीवास्तव ने बताया कि पोटेशियम सॉल्ट ऑफ एक्टिव फॉसफोरस के उपयोग से गन्ने के उत्पादन में बेहतर परिणाम सामने आए हैं। यह एक अच्छा विकल्प है।

एनएसआइ के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने बताया कि एनएसआइ और गन्ने की खेती

संगोष्ठी

- एनएसआइ में हुआ किसानों की आय बढ़ाने पर मंथन
- कहा, चीनी मिलों को इथेनॉल उत्पादन पर करना होगा विचार

से जुड़े अन्य संस्थान गन्ना किसानों की दोगुनी आय करने के लिए प्रयत्नशील हैं। गन्ने की कई नई प्रजातियां तैयार हो गई हैं, जिसमें कम पानी का उपयोग होता है। यह कम क्षेत्रफल में बेहतर उत्पादन देती है। उप्र में गन्ने की उत्पादकता रेडरोट नामक गन्ने की बीमारी के कारण काफी प्रभावित हुई है। डॉ. अशोक कुमार ने दो वर्षों में किए गए परीक्षणों का ब्योरा प्रस्तुत किया। संगोष्ठी में कई शहरों के विज्ञानिक शामिल हुए।

यह और अन्य खबरें
www.jagran.com पर पढ़ें

पीएसएपी से बढ़ेगी पैदावार

माई सिटी रिपोर्टर

कानपुर। इथेनॉल की बढ़ती जरूरत को देखते हुए गन्ना किसान अपनी उपज से मालामाल हो सकते हैं। नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआई) में गुरुवार को गन्ना उत्पादकों की आय दोगुनी करने के लिए ब्रेन स्टॉर्मिंग सेशन का आयोजन किया गया। इसमें बताया गया कि वर्ष 2025 तक देश में प्रतिवर्ष एक हजार करोड़ लीटर इथेनॉल की जरूरत पड़ेगी। इस मौके पर नए विकसित उर्वरक पोटेशियम सॉल्ट ऑफ एक्टिव फॉस्फोरस (पीएसएपी) पर विज्ञानियों ने चर्चा की। इसके इस्तेमाल से गन्ने की पैदावार बढ़ेगी और गुणवत्ता का गन्ना होगा।

एनएसआई के निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने बताया कि पीएसएपी का इंस्टीट्यूट में दो साल ट्रायल हुआ। इसके साथ ही देश के अलग-अलग सेंटरों पर भी ट्रायल हुआ है। गन्ने का उत्पादन 70 टन से बढ़कर सौ टन हो गया। पीएसएपी से एक हेक्टेयर गन्ने की फसल में 16 हजार 250 रुपये का अधिक खर्च आया लेकिन पैदावार बढ़ने से 65 हजार रुपये का फायदा हुआ है। फार्म पर संचालित वर्षा सिंचाई सिस्टम के इस्तेमाल के संबंध में भी लोगों को बताया जा रहा है। निदेशक प्रोफेसर मोहन ने बताया कि इथेनॉल की जरूरत पूरी करने के लिए गन्ने की पैदावार बढ़ानी जरूरी है। पीएसएपी से संबंधित सत्र में एग्रीकल्चर एडवाइजर डॉ. नरेंद्र जानी, टेरेटरी मैनेजर कुबेर श्रीवास्तव ने बताया कि उर्वरक से गन्ना किसान 40 फीसदी तक पैदावार बढ़ा सकते हैं। वहीं सीएसए के पूर्व कुलपति डॉ. सुशील सोलोमन ने बताया कि इससे गन्ने की उत्पादकता के साथ चीनी की मात्रा भी बढ़ जाती है।

RD CORPORATE ASSOCIATE DIARY A P

National Sugar Institute Kanpur organizes one day brain storming session

One day brain storming session on "Doubling the sugarcane farmers income through innovative techniques" was organized on 18th Feb., 2021 by the institute jointly with Sugar Journal. The session was attended by eminent scientists from Indian Agricultural Research Institute, New Delhi, Indian Institute of Sugarcane Research, Lucknow, UP Council of Sugarcane Research, Shahjahanpur along with officials from sugar factories situated in various sugar producing states. In his inaugural address, Dr. Sushil Solomon, Ex. Vice Chancellor, CSA University of Agriculture & Technology called upon the sugar factories to take up extension activities for propagating newer sugarcane varieties, carrying out inter cropping, adopting novel techniques of irrigation and application of fertilizer as per requirement. Prof. Narendra Mohan, Director in his address stressed upon use of innovative products viz. Potassium Salt of Active Phosphorous (PSAP) in enhancing the sugarcane productivity. Dr. Ashok Kumar, Asstt. Professor presented the details of trials with PSAP .